विनय भदौरिया

आधे आंगन धूप

दोहरी नीति
तुम्हारी इन्दर
दो हैं तेरे रूप
आधे आंगन
पानी बरसे
आधे आंगन धूप

जितने सूरज निकले,
उनको बादल ढाप चले
आज व्यवस्था की बाहों में
केवल सांप पले

सब थोथा ही थोथा
लगता व्यर्थ
फटकना सूप

हम तो वैसे के वैसे हैं
सदियां बदल गयीं
पोखर के हिस्से का पानी
नदियां निगल गयी

सबको तृप्ति
बांटने वाले
पड़े उपेक्षित कूप

लील गये पिछली पहचाने
वे कुर्सी के पाये
कल जो थीं मेरी देहरी पर
अपना शीश झुकाए

गिरगिट जैसे
रंग बदलते हैं
सिंहासन पर भूप।

('नये–पुराने' गीत अंक–3, सितम्बर–1998 से साभार)

हम क्या गायें

जंग लगी श्रुतियां, सब
अधमरी ऋचाएं
ओ मेरे गीत बता
अब हम क्या गाएं

सारा माहौल यहां
घुटन से भरा है
घर–आंगन
जहरीली गैस से पुरा है

सन्नाटा करता
अज्ञात प्रतिक्रियायें

तारकोल की सड़कें
मंजिल के वादे
ताकतवर पांवों के
नासमझ इरादे

दिन विधुरों के विराग
रातें विधवाएं

रावण के चेहरों पर
राम के मुखौटे
सिंहो–सा गरज रहे
आज वनबिलौटे

सूरज के इर्द–गिर्द
हैं घिरी घटाएं।

सम्पर्क–
साकेत नगर, लालगंज
रायबरेली, (उ.प्र.)